4. औद्योगिकीकरण का युग

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. एक शब्द या एक वाक्य में उत्तर दीजिए। (01 अंक)

(1) किस म्यूजिक कंपनी ने सन् 1900 ई. में संगीत की किताब प्रकाशित की?

(2) भूमध्य सागर के पूर्व में स्थित देशों को क्या कहते थे?

(3) इंग्लैण्ड प्रिंटर्स में तो जादूगर की तस्वीर कब प्रकाशित हुई थी?

(4) चुन्नटों के सहारे कपड़े को समेटने वाले व्यक्ति को क्या कहते हैं?

(5) स्पिनिंग जेनी मशीन का आविष्कार किसने किया?

(6) जे.एन.टाटा ने भारत का पहला लौह इस्पात संयंत्र कहां स्थापित किया?

उत्तर- (1) ई.टी. पॉल म्यूजिक कम्पनी (2) प्राच्य (3) 26 जनवरी 1901 (4) फुलर (5) जेम्स हरग्रीब्ज (6) जमशेदपुर।

प्रश्न 2. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(1) औद्योगिक क्रान्ति सर्वप्रथम कहां प्रारंभ हुई-

(a) इंग्लैण्ड (b) जर्मनी

(c) फ्रांस (d) इटली

(2) सूती कपड़ा मिल की रूपरेखा किसने तैयार की-

(a) जॉन राइट (b) रिचर्ड आर्कराइट

(c) जेम्स वाट (d) कार्नेगी

(3) 1840 के दशक तक इंग्लैण्ड का कौन सा उद्योग सबसे बड़ा उद्योग बन चुका था?

(a) लोहा इस्पात उद्योग (b) सूती वस्त्र उद्योग

(c) कपड़ा उद्योग (d) जूट उद्योग

उत्तर- (1) a (2) b (3) b.

प्रश्न 3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) कोलकाता में देश की पहली जूट मिल लगाने वाले ..... थे।

(2) वस्तुओं की गुणवत्ता के प्रतीक को ..... कहते हैं।

(3) उद्योगपति मजदूरों की भर्ती के लिए ..... रखते थे।

(4) ईस्ट इंडिया कंपनी में बुनकरों पर निगरानी रखने के लिए ..... नियुक्त किए थे।

(5) 1834 में सनलाइट साबुन के कैलेंडर पर ..... की तस्वीर छपी थी।

(6) स्पिनिंग जेनी मशीन का प्रयोग ..... के कार्य के लिए होता था।

उत्तर- (1) सेठ हुकुमचंद (2) लेबल (3) जाबर (4) गुमास्ता (5) भगवान विष्णु (6) ऊन कताई।

प्रश्न 3. सही जोड़ी मिलाइये-

(1) (अ)	(ब)
(1) स्टेपलर	(a) जहाज निर्माण
(2) फुलर	(b) ऊन को छांटने वाला
(3) गिल्ड्स	(c) चुन्नट्ट से कपड़े समेटने वाला
(4) स्पिनिंग जेनी	(d) ऊन कटाई मशीन
(5) कार्डिंग	(e) उत्पादकों के संगठन
(6) द्वारकानाथ टैगोर	(f) ऊन कताई
(7) भाई भोंसले	(g) ट्रेड यूनियन लीडर

उत्तर- (1) b (2) c (3) e (4) d (5) f (6) a (7) g.

प्रश्न 4. सत्य/असत्य बताइये-

(1) 1928 के ग्राइप वाटर के कैलेंडर में भगवान विष्णु का चित्र था।

(2) विक्टोरिया कालीन ब्रिटेन में उच्च वर्ग के लोग हाथ से बनी वस्तुओं को महत्व देते थे।

(3) जमशेदजी जीजीभोय एक पारसी बुनकर के बेटे थे।

(4) जे.एन.टाटा ने जमशेदपुर में पहला सूती वस्त्र उद्योग लगाया।

(5) प्रथम विश्व युद्ध के समय भारत का औद्योगिक उत्पादन कम हुआ।

उत्तर– (1) असत्य (2) सत्य (3) सत्य (4) असत्य (5) असत्य।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. स्पिनिंग जेनी क्या है?

उत्तर– जेम्स हरग्रीव्ज द्वारा 1764 ई. में बनाई गई कताई की मशीन थी इसके द्वारा एक पहिया घुमाने वाला मजदूर बहुत सी तकलियों को घुमा देता था।

प्रश्न 2. फ्लाइंग शटल का क्या अर्थ है?

उत्तर– यह रस्सियों और पुलियों के जरिए चलने वाला यांत्रिक औजार है जिसका बुनाई के लिए इस्तेमाल किया जाता था।

प्रश्न 3. ईटी पाल कौन था?

उत्तर– यह एक लोकप्रिय म्यूजिक कंपनी का प्रकाशक था, जिसने 1900 में संगीत की एक किताब प्रकाशित की थी।

प्रश्न 4. गुमास्ता कौन थे?

उत्तर– ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा बुनकरों पर नियंत्रण रखने के लिए नियुक्त वेतन भोगी कर्मचारी को गुमास्ता कहते थे।

प्रश्न 5. गुमास्ता के दो कार्य लिखिए।

उत्तर– (1) बुनकरों पर निगरानी रखना।

(2) माल इकट्ठा करना और कपड़ों की गुणवत्ताकी जांच करना।

प्रश्न 6. जॉबर कौन थे?

उत्तर– 19 वीं सदी में उद्योगपति नए मजदूरों की भर्ती के लिए पुराने और विश्वास कर्मचारी रखते थे जिसे जाबर कहते थे?

प्रश्न 7. जमशेदजी जीजीभोय कौन थे?

उत्तर– जमशेदजी जीजीभोयएक पारसी बुनकर के बेटे थे। अपने समय के बहुत सारे लोगों की तरह उन्होंने भी चीन के साथ व्यापार और जहाजरानी का काम किया था। उनके पास जहाजों का एक विशाल बेग था।

प्रश्न 8. पूर्व औद्योगिकीकरण का क्या अर्थ है?

उत्तर– इंग्लैण्ड और यूरोप में फैक्ट्रियों की स्थापना से भी पहले ही अंतर्राष्ट्रीय बाजार के लिए बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन होने लगा था। यह उत्पादन फैक्ट्रियों में नहीं होता था। बहुत सारे इतिहासकार इस चरण को आदि या पूर्व औद्योगिकीकरण का नाम देते हैं।

प्रश्न 9. जॉबर मजदूरों पर किस तरह नियंत्रण रखने लगे?

उत्तर– जॉबर, मजदूरों से काम के बदले पैसे व तोहफों की माँग करने लगे और मजदूरों की जिंदगी को नियंत्रित करने लगे।

प्रश्न 10. किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–

(1) स्टेपलर (2) फुलर (3) कार्डिंग

उत्तर– टिप्पणी–

1. स्टेपलर– ऐसा व्यक्ति जो रेशों के हिसाब से ऊन को स्टेपल करता है या छाँटता है।

2. फुलर– ऐसा व्यक्ति जो 'फुल करता है यानी चुन्नटों के सहारे कपड़े को समेटता है।

3. कार्डिंग– वह प्रक्रिया जिसमें कपास या ऊन आदि रेशों की कताई के लिए तैयार किया जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. लेबल का भारत में प्रारंभिक इतिहास क्या रहा?

उत्तर– नए उपभोक्ता पैदा करने का एक नया तरीका विज्ञापनों का है। जब मैनचेस्टर के उद्योगपतियों ने भारत में कपड़ा बेचना शुरू किया तो वे कपड़े के बंडलों पर लेबल लगाते थे। लेबल का फायदा यह होता था कि खरीदारों को कंपनी का नाम व उत्पादन की जगह पता चल जाती थी। लेबल ही चीजों की गुणवत्ता का प्रतीक था।

लेबलों का सिर्फ शब्द और अक्षर ही नहीं होते थे। उन पर तस्वीरें भी बनी होती थी जो अक्सर बहुत सुंदर होती थी। इन लेबलों पर भारतीय देवी–देवताओं की तस्वीरें प्राय: होती थी। देवी–देवताओं की तस्वीर के बहाने निर्माता ये दिखाने की कोशिश करते थे कि ईश्वर भी चाहता है कि लोग उस चीज को खरीदें। कृष्ण या सरस्वती की तस्वीरों का फायदा ये होता था

कि विदेशों में बनी चीज भी भारतीयों को जानी पहचानी सी लगती थी।

इस प्रकार भारत में भी लेबलों का महत्व बढ़ता गया।

प्रश्न 2. व्यापार क्षेत्र में विज्ञापनों का क्या महत्व है?

उत्तर- नए उपभोक्ता पैदा करने का एक तरीका विज्ञापनों का है। विज्ञापन विभिन्न उत्पादों को जरूरी और वांछनीय बना लेते हैं। वे लोगों की सोच बदल देते हैं और नयी जरूरतें पैदा कर देते हैं। आज हम एक ऐसी दुनिया में हैं जहाँ चारों तरफ विज्ञापन छाए हुए हैं। अखबारों, पत्रिकाओं, हार्डिंग्स, दीवारों, टेलीविजन के परदे पर, सब जगह विज्ञापन छाए हुए हैं। हम इतिहास में पीछे मुड़कर देखें तो पता चलता है कि औद्योगिकरण की शुरूआत से ही विज्ञापनों ने विभिन्न उत्पादों के बाजारों को फैलाने में और एक नयी उपभोक्ता संस्कृति रचने में विज्ञापनों ने अहम भूमिका निभाई है।

प्रश्न 3. प्रथम विश्व युद्ध के समय भारत का औद्योगिक उत्पादन क्यों बढ़ा?

उत्तर- भारत का आद्योगिक विकास पहले विश्वयुद्ध सबसे धीमा रहा। प्रथम विश्वयुद्ध में बिल्कुल एक नई स्थिति पैदा कर दी थी। ब्रिटिश कारखाने सेना की जरूरतों को पूरा करने के लिए युद्ध संबंधी उत्पादन में व्यस्त थे, इसीलिए भारत में मैनचेस्टर के माल का आयात कम हो गया। भारतीय बाजारों को रातों-रात एक बहुत बड़ा स्थानीय बाजार मिल गया। युद्ध लंबा चला तो भारतीय कारखानों में भी फौज के लिए जूट की बोरियाँ, फौजियों के लिए वर्दी के कपड़े, टैंट और चमड़े के जूते, घोड़े व खच्चर की जीन तथा बहुत सारे अन्य सामान बनने लगे। नए कारखाने लगाए गए। पुराने कारखाने कई पारियों में चलने लगे। बहुत सारे नए मजदूरों को काम पर रखा गया। युद्ध के दौरान औद्योगिक उत्पादन तेजी से बढ़ा।

प्रश्न 4. 19 वीं सदी के यूरोप में कुछ उद्योगपति मशीनों की अपेक्षा हाथ से काम करने वाले श्रमिकों को प्राथमिकता क्यों देते थे?

उत्तर- उद्योगपति मशीनों के बजाय हाथों से काम करने वाले श्रमिकों को प्राथमिकता देते थे। इसके निम्नलिखित कारण थे-

(क) नई तकनीक महँगी थी।

(ख) मशीनें अक्सर खराब हो जाती थी और उनकी मरम्मत पर काफी खर्च आता था।

(ग) मशीनें उतनी अच्छी नहीं थी, जितना उनके आविष्कारों और निर्माताओं का दावा था।

(घ) विक्टोरियाई ब्रिटेन में मानव श्रम की कोई कमी नहीं थी।

(ङ) उद्योगपतियों को श्रमिक की कमी या वेतन के मद में भारी लागत जैसी परेशानी नहीं थी।

(च) बहुत सारे उद्योग में श्रमिकों की मांग मौसम के आधार पर घटती बढ़ती रहती थी।

(छ) बहुत सारे उत्पाद केवल हाथ से तैयार किए जा सकते थे।

(ज) बाजार में अक्सर छोटे डिजाइन और खास आकारों वाली चीजों की काफी मांग रहती थी, जो मशीनों से नहीं बनाए जा सकते थे।

(झ) ब्रिटेन में उच्च वर्ग के लोग कुलीन और पूंजीपति वर्ग हाथों से बनी चीजों को महत्व देते थे। हाथ से बनी चीजों को परिष्कार और सुरुचि का प्रतीक माना जाता था। उनकी फिनिश अच्छी होती थी। उनका डिजाइन अच्छा होता था।

प्रश्न 5. ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय बुनकरों से सूती और रेशमी कपड़े की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए क्या किया?

उत्तर- शिक्षक की सहायता से छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 6. भारत में मैनचेस्टर पहुंचने के बाद बुनकरों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ा?

उत्तर- भारत में मैनचेस्टर के आने बुनकरों को निम्न समस्याओं का सामना करना पड़ा-

(1) जब इंग्लैण्ड में कपास उद्योग विकसित हुआ तो वहाँ के उद्योगपति दूसरे देशों से आने वाले आयात को लेकर परेशान दिखाई देने लगे। उन्होंने सरकार पर दबाव डाला कि वह आयातित इकाई पर आयात शुल्क वसूल करे जिससे मैनचेस्टर में बने कपड़े बाहरी प्रतिस्पर्धा के बिना इंग्लैण्ड में आराम से बिक सके।दूसरी तरफ उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी पर दबाव डाला कि वह ब्रिटिश कपड़ों को भारतीय बाजारों में भी बेचे।

(2) इस प्रकार भारत में कपड़ा बुनकरों के सामने एक साथ दो

समस्याएं थीं। उनका निर्यात बाजार ठह रहा था और स्थानीय बाजार सिकुड़ने लगा था।

प्रश्न 7. ईस्ट इंडिया कंपनी के नियंत्रण का बुनकरों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर– कंपनी ने कपड़ा व्यापार को सक्रिय व्यापारियों और दलालों को खत्म करने तथा बुनकरों पर ज्यादा प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित करने की कोशिश की। कंपनी ने बुनकरों पर निगरानी रखने, माल इकट्ठा करने और कपड़ों की गुणवत्ता जाँचने के लिए वेतनभोगी कर्मचारी तैनात कर दिए जिन्हें गुमाश्ता कहा जाता था।

कंपनी को माल बेचने वाले बुनकरों को अन्य खरीददारों के साथ कारोबार करने पर पाबंदी लगा दी। एक बार काम का आर्डर मिलने पर बुनकरों को कच्चा माल खरीदने के लिए कर्जा दे दिया जाता था। जो कर्जा लेते थे उन्हें अपना बनाया हुआ कपड़ा गुमाश्ता को ही देना पड़ता था।

प्रश्न 8. बहुत से मजदूरों ने स्पिनिंग जेनी का विरोध क्यों किया?

उत्तर– बेरोजगारी की आशंका के कारण मजदूर नयी प्रौद्योगिकी से चिढ़ते थे। जब उन उद्योग में स्पिनिंग जेनी मशीन का इस्तेमाल शुरू किया गया तो हाथ से ऊन कातने वाली औरतें इस तरह की मशीनों पर हमला करने लगी।

जेम्स हरग्रीव्ज द्वारा 1764 में बनाई गई इस मशीन ने कताई की प्रक्रिया तेज कर दी और मजदूरों की माँग घटा दी। एक ही पहिया घुमाने वाला एक मजदूर बहुत सारी तकलियों को घुमा देंता था और एक साथ कई धागे बनने लगते थे। इस मशीन की वजह से उनका काम छिन गया। बहुत सी महिलाएँ बेरोजगार हो गई इसलिए बहुतसे मजदूरों ने स्पिनिंग जेनी के प्रयोग का विरोध किया।

प्रश्न 9. विक्टोरिया कालीन ब्रिटेन में उच्च वर्ग के लोग हाथ से बनी वस्तुओं को क्यों पसंद करते थे तीन कारण लिखिए।

उत्तर– विक्टोरिया कालीन ब्रिटेन में उच्च वर्ग के लोग हाथ से बनी वस्तुओं को पसंद करते थे, इसके 3 कारण निम्न हैं–

(1) बहुत सारे उत्पाद केवल हाथ से ही तैयार किए जा सकते थे। बाजार में अकसर बारीक डिजाइन और खास आकारों वाली चीजों की काफी माँग रहती थी।

(2) हाथ से बनी चीजों को परिष्कार और सुरूचि का प्रतीक माना जाता था।

(3) हाथ से बनी चीजों को फिनिशिंग अच्छी होती थी। उनको एक-एक करके बनाया जाता था और उनका डिजाइन अच्छा होता था।

प्रश्न 10. औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया को समझाइए।

उत्तर– औद्योगीकरण के इतिहास अकसर प्रारंभिक फैक्ट्रियों की स्थापना से भी पहले ही अंतर्राष्ट्रीय बाजार के लिए बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन होने लगा था। यह उत्पादन फैक्ट्रियों में नहीं होता था। बहुत सारे इतिहासकार इसे औद्योगीकरण का चरण मानते हैं। यहाँ से औद्योगीकिकरण की प्रक्रिया प्रारंभ मानी जाती है। ❑